कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) | | | | | | | |

(In Words) --

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में --

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय ....हिन्दी........

परीक्षा का दिन ....

दिनांक ....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ 15 1/4 को 16, 17 1/2 को 18, 19 3/4 को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षक नामांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 164/2018

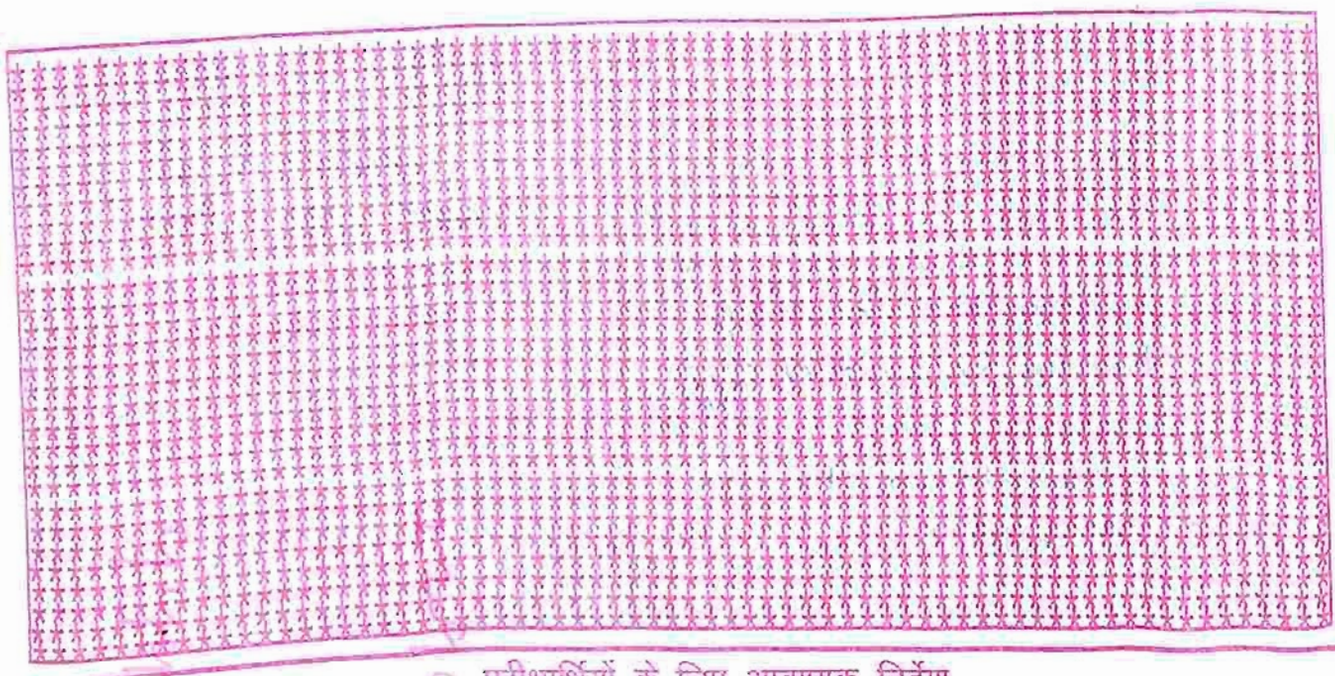

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाडें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी प्रश्नपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा कन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - ग

(10) संदर्भ :- प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी पाठ्यपुस्तक 'सृजन' के 'नीति के दोहे' नामक अंश से संकलित है जो कविता कामिनी को अपने कलेश्वर से कंचनमयी बनाने वाले कवि रहीमदास द्वारा रचित है।

प्रसंग :- प्रस्तु पद्यावतरण में कवि ने संगति के महत्व को स्पष्ट किया है। मनुष्य का व्यवहार उसकी संगति पर निर्भर करता है। इसके साथ ही कवि ने मान-सम्मान, गरिमा का महत्व स्पष्ट किया है।

व्याख्या :- नीतिपरख एवं लोकव्यवहार की सीख देने वाले सामंजस्यवादी कवि रहीमदास जी कहते हैं कि स्वाति नक्षत्र में पड़ने वाला जल एक ही होता है परन्तु जब वह केले पर पड़ता है तो कपूर बनता है, सीपी पर पड़ने पर मोती तथा सांप के मुख में पड़ने पर भयंकर गरल बन जाता है। अतः मनुष्य का व्यवहार उसकी संगति पर निर्भर करता है। अच्छी संगति से जो मनुष्य सज्जन बनता है, कुसंगति से वही दुर्जन बन जाता है। दूसरे दोहे में रहीमदास जी स्पष्ट करते हैं कि मान-सम्मान का जीवन में विशेष महत्व है। कवि कहता है कि देवताओं की विनती पर भगवान शिव ने कालकूट पिया जिससे वे जगदीश्वर कहलाये जबकि राहु नामक दैत्य ने छल से अमृत पीने की कोशिश की तो उसे सिर कटाना पड़ा। अतः मान सहित विष भी ग्रहण करने योग्य है जबकि बिना सम्मान के राज-सिंहासन भी ग्रहण योग्य नहीं है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

विशेष :- (i) पद्यांश में कवि ने सुसंगति करने व आत्मसम्मान रखने का संदेश दिया है।
(ii) भाषा स्पष्ट, प्रवाहमयी व बोधगम्य है।
(iii) प्रसाद गुण व पांचाली रीति है।
(iv) दोहा छंद का प्रयोग है।

(ii) संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य पुस्तक 'सृजन' के 'भय' नामक अंश से संकलित है जो हिन्दी साहित्य के महान समालोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा रचित है।

प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने भय नामक मनोविकार के परिहार की एक प्रक्रिया बतायी है। कवि कहता है कि सभ्यता के प्रसार से आज मनुष्य, मनुष्य को दुख पहुँचा रहा है।

व्याख्या :- हिन्दी साहित्य के महान गद्यकार एवं समालोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी कहते हैं कि जब मनुष्य इस संसार में जन्म लेता है तो उसे सर्वत्र दुखपूर्ण वातावरण दिखाई देता है, उसे चराचर जगत का ज्ञान नहीं होता है। बड़ा होने पर वह अपने हृदयबल, ज्ञानबल व बाहुबल के आधार पर भय की वासना का परिहार करता है। इससे उसके हृदय की भीरुता समाप्त हो जाती है। आज के दौर में, सभ्यता एवं विज्ञान का प्रसार होने से भूत-प्रेतों का, हिंसक पशुओं का भय

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

तो नहीं सताता है परंतु मनुष्य ने दुःख देने की नयी विधियाँ विकसित कर ली हैं। आज मनुष्य, दूसरे मनुष्य को दुःख पहुँचाने में लगा है। अमीर लोग गरीबों का, सशक्त देश अशक्त देशों का शोषण कर रहे हैं। पहले समय में मनुष्य को घर-जायदाद जबरन छिनने का भय सताता था परंतु आज यह भय सताता है कि नकली दस्तावेजों के प्रयोग से उसे इन वस्तुओं से वंचित न कर दे। अतः स्पष्ट है कि सभ्यता के प्रसार से केवल दुःख-दान की विधियाँ बहुत गूढ़ और जटिल हो गई हैं।

विशेष :- (i) गद्यांश में कवि ने भय के निवारण एवं सशक्तों द्वारा अशक्तों के शोषण पर व्यंग्य किया है।
(ii) भाषा सरल, भावमयी व भावानुकूल है।
(iii) तत्सम, तद्भव शब्दावली का प्रयोग है।

(12) लेखक ~~जैनेन्द्र~~ जैनेन्द्र कुमार बाजार के जादू के बारे में वर्णन करते हैं कि बाजार में एक जादू है। यह जादू आँख की राह काम करता है। यह जादू सभी मनुष्यों को प्रभावित करता है। बाजार के जादू की पकड़ से बहुत कम लोग बच पाते हैं। बाजार लोगों को आकर्षित करता है कि आओ! मुझे लूटो, मेरा स्वरूप और किसलिए है? लोग बाजार के सौंदर्य में पड़कर बहुत सी अनावश्यक वस्तुएँ खरीद लेते हैं जिससे बाजार की सार्थकता भंग होती है। परन्तु जिस प्रकार चुंबक का जादू केवल लोहे पर चलता है, उसी प्रकार बाजार का जादू भी केवल उन्हीं पर चलता है जिनके मन खाली होते हैं। जिन लोगों का मन भरा होता है, उन पर बाजार के जादू का कोई असर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

नहीं हो पाता है। लेखक चूरन वाले भगतजी का उदाहरण देता है कि उस व्यक्ति का मन क्या है। वह बाजार के सौंदर्य से बिल्कुल आकर्षित नहीं होता जिससे वह बाजार को सार्थकता प्रदान करता है। लेखक कहता है कि यदि व्यक्ति बाजार जाये तो उसे अपनी आवश्यकता का पता होना चाहिए जिससे वह बाजार के जादू से बेअसर रहे।

(13) हिन्दी साहित्य में हालावाद के प्रवर्तक कवि हरिवंश राय बच्चन ने अपनी कविता 'आत्म-परिचय' में अपने हृदय के उद्गारों का वर्णन किया है। कवि की यह कविता मनुष्य को उसकी अस्मिता की पहचान कराती है। कविता में कवि ने स्पष्ट किया है। कि मनुष्य इस संसार को सत्य समझने की नादानी करता है व इस संसार के माया जाल में अपना जीवन नष्ट कर लेता है। कवि ने लिखा भी है -

नादान वहीं हैं, हाय! जहाँ पर दाना।

कवि अपनी कल्पनाओं में सरस एवं प्रेममय संसार की कल्पना करता है जो यह संसार दर्शाता है कि संसार में प्रेम में एवं सरसता का अभाव है।

कवि कहता कि मनुष्य संसार में धन-वैभव जोड़ने में लगा है जो कि व्यर्थ है। कवि धन-वैभव के लच जाल में न फँसकर सादगी एवं प्रेम-दीवानगी के साथ जीवन जीने का संदेश देता है। जैसे कवि ने कहा है -

जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग उसे ठुकराता।

क द्वारा अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

मैं दीवानों का वेष किए फिरता हूँ।
माँगता निःशेष लिए फिरता हूँ।

कवि संसार के स्वार्थीपन से भी नाखुश है इसलिए वह कहता है -

जग पूछ रहा उनको जो जग की गाते।

अतः स्पष्ट है कि यह कविता हमें पहचान का बोध कराती है।

(14) सूरदास जी ने 'भ्रमरगीत' में प्रेम एवं शृंगार रस का अनूठा मिश्रण किया है। एक ओर तो कवि ने गोपियों की विरह व्यथा का मार्मिक चित्रण करके वियोग शृंगार रस को दर्शाया है। इसी ओर प्रेम एवं भक्ति के साथ श्रीकृष्ण के सलोने रूप एवं उनकी कृपा का वर्णन किया है। कवि ने श्रीकृष्ण को श्रेष्ठ माना है गोपियों को योग संदेश कड़वी ककड़ी की तरह तनिक भी नहीं सुहाती है। अतः सूरदास ने अपने पदों में प्रेम - भक्ति की अमृतधारा प्रवाहित की है।

(15) तुलसीदास कहते हैं कि जब मनुष्य का बुरा समय आता है तो उसके सखा होते हैं, धैर्य, धर्म, विवेक, साहित्य, सत्यव्रत आदि। कवि कहता है कि बुरे समय में स्वार्थी संसार साथ नहीं देता है। उस समय में मनुष्य को धैर्य, बुद्धि, विवेक के साथ कठिनाइयों का सामना करना चाहिए तथा प्रभु श्री राम की आराधना करनी चाहिए।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(16) शासन की दृष्टि में समानता महत्वपूर्ण है। यह प्रजातंत्रवाद को कायम रखने के लिए अत्यावश्यक है। लेखक के अनुसार शासन में समानता होने पर अल्पमतों पर बहुमतों का अत्याचार नहीं होता है। शासन में समानता होने पर जातिगत एवं पारस्परिक भेदभाव समाप्त हो जाता है। अतः शासन में समानता प्रजातंत्रवाद के लिए एक आवश्यक शर्त है।

(17) पिता द्वारा उत्कोच स्वीकार करने पर ममता का हृदय क्रोध एवं पीड़ा से भर गया। सावित्र्य का वरण करके उत्कोच लेना वह एक घृणित कर्म मानती है। वह संतोषी स्वभाव की आदर्श नारी है। वह मानती है कि बुरे समय में भू-पृष्ठ पर बचे हिंदू उसकी सहायता करेंगे। अतः परमपिता परमात्मा की इच्छा के विरुद्ध भविष्य का वरण करके उत्कोच लेना भारतीय आदर्शों में कदापि उचित नहीं है।

(18) कवि कुँवर नारायण →

जीवन परिचय – आधुनिक हिन्दी कविता के सशक्त हस्ताक्षर कवि कुँवर नारायण का जन्म सन् 1927 में उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जिले में हुआ। उन्होंने इन्टर तक की शिक्षा विज्ञान

के अभ्यर्थी के रूप में की परंतु साहित्य में रूचि होने के कारण वे साहित्य के विद्यार्थी बन गये। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम. ए. किया। इन्हें अपने जीवन में परिजनों का वियोग सहना पडा। कार चलाना इनका पैतृक व्यवसाय था। इन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। ये अज्ञेय द्वारा संपादित मासिक पत्रिका के अध्यक्ष रहे। 15 नवम्बर 2017 को इनका निधन हुआ।

साहित्यिक परिचय :- कवि कुँवर नारायण नगरीय संवेदना के कवि हैं। इनके यहाँ विवरण बहुत कम हैं। इनकी कविताओं में व्यर्थ का अखबारीपन सतहीपन, वैचारिक धुंध नहीं है। इन्होंने आधुनिक भौतिकवादी युग में कविता का महत्व दर्शाया है। ये कविता में भाषा की सहजता पर बल देते हैं। भाषा के चक्कर में सीधी बात भी अग्राह्य हो जाती है।

रचनाएँ :- आमने - सामने, इन दिनों, चक्रव्यूह

(19) कवि 'शमशेर बहादुर सिंह' ने 'उषा' कविता में प्रातःकालीन निरंतर बदलते वातावरण का चित्रण किया है। कवि ने आसमान को राख से लीपा चौका, काली सिल तथा सूर्य की लाल किरणों को लाल खडिया चॉक, लाल केसर आदि उपमान दिये हैं। सूर्योदय के समय सूर्य की किरणों को गोरी युवती की देह बताया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(20) बसन्त की दो चारित्रिक विशेषताएँ-

(i) वसन्त प्रायः बाह्य तड़क-भड़क पर अधिक ध्यान नहीं देता है। उसके स्वभाव में व्यर्थ का दिखावटी-पन नहीं है।

(ii) वसन्त बाह्य तड़क-भड़क की बजाय सेहत को अधिक महत्व देता है। सेहत का ख्याल रखना चाहिए क्योंकि जीवन में जो कुछ है, सेहत है।

खण्ड – घ

(21) गांधीजी के अनुसार मनुष्य और उसका काम दो भिन्न वस्तुएँ हैं। अच्छे काम के प्रति आदर तथा बुरे काम के प्रति तिरस्कार भाव होना चाहिए। अच्छे तथा बुरे मनुष्यों के प्रति हमेशा आदर होना चाहिए। यह बात कहने में सरल है परन्तु इसके अनुसार आचरण कठिन है।

(22) जब लड़की ने कहा कि कल, देखते नहीं, यह रेशम से कढ़ा सालू। तो लहना की मनोवैज्ञानिक स्थिति पर विशेष प्रभाव पड़ा। उसके व्यवहार में परिवर्तन आ गया। उसके कारण छावनी वाले की दिन भर की कमाई खो गई, उसने गोभी वाले के ठेले में दूध उँडेल दिया, लड़के को नाली में धक्का मारा तथा वैष्णवी से टकराकर अंधे की उपाधि पायी।

प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(23) जब महादेवी वर्मा ने यह सुना कि गाय को सुई खिला दी गई है तो उसे कष्ट व आश्चर्य की अनुभूति हुई। लेखिका दाना-चारा तो खुद देखभाल के देती थी फिर उसमें सुई कैसे चली गई। जब डॉक्टर ने बताया कि सुई गुड की डली के साथ अन्दर गई है तो लेखिका को खयाल आया कि ग्वाले ईर्ष्यालु ग्वाले ने गौरा को सुई खिलाकर उसकी असमय मृत्यु निश्चित कर दी है। इससे लेखिका को कष्ट की अनुभूति हुई।

(24) अमृतलाल नागर ने 'मानस का हंस' नामक उपन्यास में रत्नावली का आदर्श भारतीय नारी की कि तरह चित्रण किया है। रत्नावली ने तुलसीदास के रास्ते में बाधक न बनकर आदर्श नारी की तरह उनका साथ दिया। आदर्श भारतीय नारी के लिए पति परमेश्वर होता है। इसलिए आश्रम में आने पर वह पति के पैर धुती है। आदर्श भारतीय नारी की तरह रत्नावली अपने हाथों से आश्रम में खाना बनाकर पति को खिलाती है। जब तुलसीदास उसकी एक झलक देखना चाहते थे तो वह सतर्कता से अपने आपको बचाती है ताकि उनकी राम प्राप्ति मार्ग में बाधा न हो। आदर्श नारी खुद कष्टों में जीती है। राजा भगत तुलसी से कहते हैं कि हमने भौजी जैसी तपस्विन नहीं देखी। यह कलयुग में कठिन योग साधना करती है। रोजाना भोजन बनाकर भूखे-कंगाले को खिलाती है, स्वयं बिना चुपडी रोटी, बिना साग-भाजी के खाकर अपने दिन

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

बिताती है। रोज तुलसी के बैठके में झाड़ू लगाती है, पूजा सामग्री रखती है। वह एक पतिव्रता नारी है। राजा भगत कहते हैं कि तुम तुम्हारी तपस्या तो सारा जग देख रहा है, हम तो भौजी की तपस्या देखकर मन को ठिकाने लाए हैं। अतः इस प्रकार रत्नावली आदर्श पतिव्रता नारी का प्रतिबिंब है।

खण्ड – ड़

(25) टीवी समाचारों की विशेषताएँ –

(i) टीवी समाचार तथ्यों पर आधारित होते हैं।

(ii) भाषा सरल, स्पष्ट होती है।

(iii) इनमें विजुअल के माध्यम से खबर की पुष्टि की जाती है।

(iv) ये विशेष विषयों पर केन्द्रित होते हैं जैसे :- क्राइम बुलेटिन, स्पोर्ट्स बुलेटिन आदि।

② (26) संपादक को पत्र लिखते समय खबर की प्रासंगिकता एवं सामयिकता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। खबर में संक्षिप्त शब्दों में पूर्ण जानकारी होनी चाहिए। संपादक केवल पूर्णतः प्रासंगिक एवं सामयिक खबरों का ही संपादन करता है। जिस विषय पर खबर है उसकी तह तक जानकारी देनी चाहिए।

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(27) किसी साक्षात्कार को लिखने के बाद उसकी प्रासंगिकता तथा शब्दावली का ध्यान रखना चाहिए। उसे अधिक प्रभावी व सहज व सरल ढंग से प्रस्तुत करने के प्रयास किये जाने चाहिए। प्रकाशन से पूर्व साक्षात्कार को प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक सुधार कर लेने चाहिए।

(28) यदि मुझे पत्रकार बनना पड़े तो मैं खेल पत्रकारिता करना चाहूँगा क्योंकि आजकल खेलों के प्रति तीव्र रुचि बढ़ रही है। अखबारों में कुछ पृष्ठ खेल समाचारों के लिए नियत रहते हैं। खेल समाचारों के लिए खेल से संबंधित नियमों, तकनीकी शब्दावली का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। इसके अलावा विश्लेषणता, सजगता, निष्पक्ष रिपोर्टिंग, तेज गति से लिखने की क्षमता आदि गुणों का समावेश होना चाहिए। साथ ही, खेल रिपोर्टर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बदलते खेल नियमों व संगठनों की जानकारी होनी है।

(29) यात्रा के संदर्भ में मोहन राकेश कहते हैं कि यात्रा करना मनुष्य की नैसर्गिक प्रकृति है। इससे उसमें तटस्थ दृष्टि का विकास होता है। एक ही स्थान पर रहने से बुद्धि शमित एवं कुंठित हो जाती है। यात्रा करने से मन में कुंठा नहीं रहती है। खुलेपन में यात्रा करने से नैतिकता के मानदंड बदल जाते

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

हैं। यात्रा से विभिन्न संस्कृतियों, बोल-चाल, रहन-सहन की जानकारी बढ़ती है। यात्रा से ज्ञानार्जन होता है, पर्यटन उद्योग विकसित होता है। लोगों से मेल मिलाप बढ़ता है। अतः संसार के वैविध्य का आनन्द लेने के लिए यात्रा करनी चाहिए।

खण्ड - ख

(3) (अ) खड़ी बोली हिन्दी ने अपने शब्द-भण्डार का विस्तार किया है। इसमें शब्दों के निर्माण, पद रचना, वर्णों के उच्चारण स्थान आदि का विशेष अध्ययन किया जाता है।

(ब) व्याकरण ऐसा शास्त्र है जो किसी भाषा को लिखने, पढ़ने के नियमों का ज्ञान करता है व्याकरण के माध्यम से किसी विषय के टुकड़े-टुकड़े कर उसके गहन अध्ययन में सहायता मिलती है।

क द्वारा | प्रश्न
त अंक | संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(4) (अ) चीन 'साम्राज्य विस्तार नीति' पर कार्य करता है।

चीन :- संज्ञा - व्यक्तिवाचक
कारक - कर्ता
लिंग - पुल्लिंग
वचन - एकवचन

(ब) रजनी समय से पहले आ गई।

से पहले :- अव्यय - कालवाचक क्रियाविशेषण
लिंग - स्त्रीलिंग
वचन - एकवचन

(5) 'चमेली का पुष्प श्वेत वर्ण का सुगंधित पुष्प है।'
प्रस्तुत पंक्ति मुख्यार्थ का बोध कराती है। अतः इसमें अभिधा शब्द शक्ति होगी क्योंकि अभिधा में मूल शब्द वाचक तथा प्राप्त होने वाले अन्य अर्थ मुख्यार्थ, सांकेतिक आदि हैं।

(6) प्रस्तुत दोहे में सभंग श्लेष अलंकार है।
दोहे में 'तरयो ना' नामक शब्द का एक अर्थ है 'कान का आभूषण' तथा इसका दूसरा अर्थ है 'तरयो + ना' अर्थात उक्त उच्चार नहीं हुआ। अतः एक ही शब्द के एक से अधिक अर्थ होने से श्लेष अलंकार है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(7) (अ) Sh Schedule - समय- सारणी

(ब) Project - परियोज परियोजना

(8)

अर्द्धशासकीय पत्र

पत्र क्रमांक:- 141/शिविरा/20

मंजु सिनसिनवार

शासन सचिव

(8)

अर्द्धशासकीय पत्र

पत्र क्रमांक:- 120/शिविरा/14

रविकुमार
शासन सचिव

शिक्षा विभाग, राजस्थान
दिनांक:- 10 मार्च 2018

प्रिय प्रधान जी

आपको विदित है कि हमारा राज्य देश में शिक्षा के क्षेत्र दूसरे स्थान पर है। हमारे राज्य में शिक्षा साधनों एवं प्रणाली में निरंतर विकास हो रहा है। राज्य के सरकारी विद्यालय शिक्षा के प्रमुख स्रोत हैं जिनमें शिक्षा की गुणवत्ता सही नहीं है। आपसे अनुरोध है कि विद्यालय में गुणवत्ता गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा शिक्षा प्रणाली सुनिश्चित करें जिससे बच्चों को शिक्षा के अच्छे अवसर मिलें।

सभी संख्या ५

सभी संस्था प्रधान
राजस्थान राज्य

आपका शुभचिंतक
रविकुमार
(हस्ताक्षर)
शासन सचिव

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

9

बालिका शिक्षा

(i) प्रस्तावना
(ii) बालिका/नारी शिक्षा की आवश्यकता
(iii) बालिका शिक्षा का महत्व
(iv) बालिका शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण
(v) उपसंहार

प्रस्तावना :- भारत देश में प्राचीन काल से ही नारी को विशेष दर्जा प्राप्त है। उसे भारतीय समाज में अर्द्धांगिनी कहा जाता है। औरत को पति का बाँया अंग माना जाता है। नारी के बिना संसार अधूरा है क्योंकि नारी बेटी है, माँ है, भार्या है, बहिन है। संसार में प्रत्येक सफल आदमी के पीछे किसी न किसी औरत का हाथ होता है। लेकिन भारत में औरतें शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ रही हैं, उन्हें पुरूषों के समान शिक्षा अवसर नहीं दिए जाते हैं।

बालिका शिक्षा की आवश्यकता :- भारत में देश के विकास की दृष्टि से बालिका शिक्षा महत्वपूर्ण है। बालिका शिक्षा की आज महती आवश्यकता है। बालिकाओं को लड़कों के समान अवसर प्रदान करने चाहिए। पिछले कुछ वर्षों में बालिकाएँ लड़कों से अधिक प्रशासनिक पदों एवं अन्य पदों पर चयनित हुई हैं। बालिका शिक्षा के देश के विकास का सपना पूर्ण हो सकता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था -
यदि आप एक पुरुष को शिक्षा देंगें तो एक शिक्षित होगा। यदि आप एक स्त्री को शिक्षा देंगें तो पूरा परिवार शिक्षित होगा।

(iii) बालिका शिक्षा का महत्व :- बालिका शिक्षा देश के लिए वरदान के समान है। बालिका शिक्षा देश को विकसित देशों की श्रेणी में खड़ा कर सकती है। बालिका शिक्षा से देश की साक्षरता दर बढ़ेगी जिससे - विदेशों में भारत की छवि उभरेगी। यदि महिलाएँ शिक्षित होंगी तो वे सक्रिय राजनीतिज्ञ व शासक होंगी। जिस प्रकार एक गृहिणी घर को चलाती है, उसी प्रकार शिक्षित नारी देश को आसानी से चला सकती है। किसी दार्शनिक ने ठीक ही कहा है -

बेटी है देश का गौरव और शान।
इन्हें दें शिक्षा और मान-सम्मान॥
देश करे तभी विकास, जब शिक्षा हो बालिकाओं के पास।

(iv) बालिका शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण :- प्राचीन समय में बालिकाओं की शिक्षाओं को महत्व दिया जाता था। बालक व बालिकाओं के लिए अलग अलग- अलग गुरुकुल होते थे। परंतु मध्यकालीन युग में मुगलों के प्रवेश से बालिका शिक्षा पर प्रतिबंध लगा दिया।

लोग मानते थे कि लड़की को घर पर ही रहकर घर का कार्य सीखना चाहिए पढ़-लिखकर लड़की का जीवन व्यर्थ चला जायेगा। इस प्रकार मध्यकालीन युग में आततायियों के आक्रमण से स्त्री का गौरवमय स्वरूप खो सा गया।

परन्तु स्वतंत्र भारत में विभिन्न संगठनों की मदद से नारी अपनी पहचान बनाने में सक्षम हुई है। आज पूरे देश में नारी शिक्षा का जोर है। आज लोगों के दिमाग में 'शिक्षित नारी : सुख-समृद्धकारी' जैसे विचार पनपे हैं। लोगों को शिक्षित नारी का महत्व समझ में आ गया है। सरकार ने लिंग परीक्षण पर प्रतिबंध लगाकर कन्या भ्रूण हत्या रोकी है। प्रधानमंत्री ने 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' मुहिम शुरू की है। 8 मार्च को अंतराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है। अब लोग समझ गए हैं कि

प्रकृति ने कब बतलाया, पुरूष बली है नारी बलहीन।
उसमें कहाँ अंकित रे, पुरूष बली नारी निकृष्ट अतिदीन।।

उपसंहार :- नारी शिक्षा का महत्व लोगों की समझ में आया है। सरकार भी इसे बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठा रही है। अतः नारी शिक्षा अति महत्वपूर्ण है व देश के विकास में सहायक है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - क

(1) (अ) समाज के कल्याण के लिए मनुष्य को सर्वप्रथम पारिवारिक शान्ति, सद्भाव और प्रेम के साथ जीते हुए परस्पर मिल-जुलकर कार्य करना चाहिए।

(ब) किसी देश को प्रशंसनीय बनाने के लिए वहाँ के निवासियों में देश के प्रति गर्व एवं मातृ-भूमि पर स्वाभिमान होना चाहिए। सह-अस्तित्व एवं बन्धुत्व की भावना होनी चाहिए।

(2) (अ) किसी भी कार्य को करने से पूर्व उसके अंत के बारे में विचार करना चाहिए। उस कार्य से होने वाले हानि-लाभ के बारे में विचारना चाहिए।

(ब) :- देश के सुधार के लिए हमें देश से प्रेम करना चाहिए, हृदय में परोपकार की भावना रखनी चाहिए, जातिगत भेदभाव को समाप्त कर देश के उत्थान के उपाय सोचने चाहिए।

→ END ←

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर